मूल्य : ₹ 50 अक्टूबर 2025 आई.एस.ओ. 9001: 2015 संगठन

भाकृअनुप
ICAR

खेती

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

• इस अंक में •

मानव स्वास्थ्य में लाभकारी गेहूं घास
फसल अवशेषों का बाह्य-स्थल प्रबंधन
शूकर पालन से बढ़ाएं आमदनी
बकरीपालन से आदिवासी कृषकों का उत्थान

शूकर पालन से आत्मनिर्भरता

आज के समय में जब युवा पीढ़ी शहरी जीवन और आधुनिक नौकरियों की ओर तेजी से आकर्षित हो रही है, वहीं असोम के एक छोटे से गांव की 18 वर्षीय छात्रा नम्रता जी ने अपने संकल्प और जज्बे से एक अनोखी मिसाल कायम की है। सुश्री नम्रता जी ने यह साबित किया है कि अवसर और साधन सीमित होने पर भी यदि इच्छा शक्ति प्रबल हो, तो सफलता निश्चित है। पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ-साथ उन्होंने पारंपरिक पशुपालन को वैज्ञानिक पद्धतियों से जोड़कर एक नई दिशा दी है। जहां उनकी पीढ़ी की अधिकांश लड़कियां खेती या शूकर पालन को आकर्षक नहीं मानती, वहीं नम्रता जी ने इस क्षेत्र में न केवल अपनी रुचि दिखाई बल्कि इसे आर्थिक आत्मनिर्भरता का साधन भी बनाया।

शूकर पालन को अक्सर ग्रामीण समुदाय में सीमित संभावनाओं वाला व्यवसाय माना जाता है, लेकिन नम्रता जी ने इसे आत्मनिर्भरता और नवाचार का प्रतीक बना दिया। इनकी मेहनत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण साबित करते हैं कि यह पारंपरिक व्यवसाय भी युवाओं को सम्मान, आय और भविष्य की नई दिशा प्रदान कर सकता है।

नम्रता जी बचपन से ही जिज्ञासु और मेहनती रही हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य होने के बावजूद इन्होंने अपने सपनों से कभी समझौता नहीं किया। 10वीं कक्षा में 87 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उन्होंने यह सिद्ध किया कि वे पढ़ाई में भी प्रतिभाशाली हैं। पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने अपने पिता को सहयोग करना शुरू किया और धीरे-धीरे शूकर पालन को गंभीरता से अपनाया।

शावकों के पोषण और सुरक्षा पर विशेष ध्यान

भावी कदम

नम्रता जी का सपना यही तक सीमित नहीं है। वे अपने फार्म को ब्रीडर सुविधा के रूप में विकसित करना चाहती हैं, जहां गुणवत्तापूर्ण नस्लें तैयार कर उन्हें बाजार में बेचा जा सके। इससे न केवल उनकी आय बढ़ेगी, बल्कि आसपास के किसानों को भी लाभ मिलेगा। इसके साथ ही वे अपनी उच्च शिक्षा जारी रखकर एक सफल कृषि उद्यमी और प्रेरणादायी आदर्श बनना चाहती हैं। नम्रता जी की सफलता यह संदेश देती है कि मेहनत, लगन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई भी युवा परंपरागत क्षेत्रों में नई संभावनाएं उत्पन्न कर सकता है। शूकर पालन, जिसे पहले कम आकर्षक व्यवसाय माना जाता था, अब उनके प्रयासों से आत्मनिर्भरता और नवाचार का प्रतीक बन चुका है।

वैज्ञानिक तकनीक

नम्रता जी ने शूकर पालन को केवल परंपरा के रूप में नहीं अपनाया, बल्कि इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विकसित करने का संकल्प लिया। वर्तमान में इनके पास 2 जंगली शूकर, 4 मादा शूकर और 12 पशुपालक इकाइयां हैं। शैक्षणिक अवकाश का उपयोग करते हुए नम्रता जी भाकृअनुप-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान संस्थान, रानी (गुवाहाटी) पहुंची और वहां वैज्ञानिक शूकर पालन एवं कृत्रिम गर्भाधान पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। इनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि इन्होंने लागत कम करने पर विशेष ध्यान दिया। सामान्य किसान जहां महंगा चारा खरीदते हैं, वहीं नम्रता जी ने स्थानीय स्तर पर उपलब्ध चावल की पॉलिश और मछली बाजार के अपशिष्ट को पकाकर शूकरों को खिलाना शुरू किया। इससे न केवल खर्च कम हुआ, बल्कि शूकरों के स्वास्थ्य और उत्पादन में भी सुधार हुआ।

संस्थान से सहयोग और जैव सुरक्षा उपाय

नम्रता जी को भाकृअनुप-राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान संस्थान से एससीएसपी कार्यक्रम के तहत जैव सुरक्षा किट और कृषि उपकरण भी प्राप्त हुए। इनका उपयोग करके इन्होंने अपने फार्म को साफ-सुथरा और सुरक्षित बनाए रखा।

जिज्ञासा से समृधि

नवाचार और अजोला उत्पादन

नम्रता जी ने शूकर पालन को अजोला की खेती से जोड़कर और भी सफल बना दिया। अजोला एक जलकुंभी जैसा पौधा है, जिसमें प्रोटीन और खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। नम्रता जी ने इसका उपयोग शूकरों के लिए सस्ते और पौष्टिक चारे के रूप में किया। वे सूखे अजोला को सप्ताह में एक बार पोषण पूरक के रूप में देती हैं। इस पहल ने न केवल चारे की लागत घटाई, बल्कि शूकरों की वृद्धि दर को भी बढ़ाया।

फार्म की नियमित सफाई और कीटाणु शोधन पर उनका विशेष ध्यान रहा। यही कारण है कि जहां आसपास के कई फार्म 'अफ्रीकन स्वाइन फीवर' जैसी गंभीर महामारी से प्रभावित हुए वहीं नम्रता जी का फार्म पूरी तरह सुरक्षित रहा। उनकी दूरदर्शिता और अनुशासन ने उन्हें इस संकट से बचाया।

स्वच्छता और कीटाणुशोधन

आर्थिक सफलता की उड़ान

नम्रता जी की मेहनत का सबसे बड़ा प्रमाण उनकी आर्थिक सफलता है। पिछले वर्ष इन्होंने 32 शावक बेचकर 1,44,000 रुपये अर्जित किए। साथ ही दो शूकर बेचकर 60,000 रुपये कमाए और कुल मिलाकर आय 2 लाख रुपये से अधिक रही। यह उपलब्धि न केवल इनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने वाली थी, बल्कि इससे इनका आत्मविश्वास भी बढ़ा। अब वे अपने परिवार की मदद करने के साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी स्वयं की आय से पूरी कर पा रही हैं। ■

(स्रोत: भाकृअनुप की वेबसाइट)

भाकृअनुप
ICAR

खेती

कृषि विज्ञान द्वारा ग्रामोत्थान की मासिक पत्रिका

वर्ष: 78, अंक: 6, अक्टूबर 2025

संपादन सलाहकार समिति

1. **डा. राजबीर सिंह** — **अध्यक्ष**
   उप-महानिदेशक (कृषि विस्तार)
   भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
2. **डा. अनुराधा अग्रवाल** — **सदस्य**
   परियोजना निदेशक (डीकेएमए)
   भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
3. **डा. विनोद कुमार सिंह** — **सदस्य**
   निदेशक
   भाकृअनुप-क्रीडा, हैदराबाद
4. **डा. धीर सिंह** — **सदस्य**
   निदेशक
   भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल
5. **डा. के.के. सिंह** — **सदस्य**
   कुलपति
   सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय
   मोदीपुरम, मेरठ
6. **श्री हर्षवर्धन** — **सदस्य**
   प्रधान जनसंपर्क अधिकारी, इफको, नई दिल्ली
7. **श्री रितु राज** — **सदस्य**
   कृषि पत्रकार
8. **सुश्री नीलम त्यागी** — **सदस्य**
   प्रगतिशील किसान
9. **सुश्री सुनीता अरोड़ा** — **सदस्य सचिव**
   प्रभारी, हिन्दी संपादकीय एकक (डीकेएमए)
   भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

प्रधान संपादक
डा. अनुराधा अग्रवाल
संपादक
सुनीता अरोड़ा
संपादन सहयोग
गजेन्द्र

प्रभारी (उत्पादन एकक)
पुनीत भसीन

प्रभारी (व्यवसाय एकक)
भूपेन्द्र दत्त
दूरभाष: 011-25843657
E-mail: businessuniticar@gmail.com
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि अनुसंधान भवन, पूसा गेट, नई दिल्ली-12

एक प्रति: रु. 50.00 वार्षिक : रु. 500.00
विशेषांक : रु. 200.00

E-mail : khetidipa@gmail.com

डिस्क्लेमर

लेखों में व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं। उनसे भाकृअनुप की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार भाकृअनुप-डीकेएमए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुन: प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है। रसायनों-कीटनाशकों की डोज संबंधित संस्तुतियों का प्रयोग विशेषज्ञों से परामर्श के बाद करें। समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

इस अंक में

विदेशक की कलम से — पोषण की पहल, साझेदारी के संग, **अनुराधा अग्रवाल**

4 औषधीय

मानव स्वास्थ्य में लाभकारी गेहूं घास
आरती कुमारी, शशांक शेखर सोलंकी, अनुपम आदर्श, सीमा **और** रमेश कुमार शर्मा

13 दृष्टिकोण

कार्बन खेती से पर्यावरण संरक्षण
गीता सिंह **और** काव्या टी.

6 उपयोगी

फसल अवशेषों का बाह्य-स्थल प्रबंधन
प्रदीप कुमार, अर्डिथ शंकर, स्वीटी कुमारी, सौरभ कुमार **और** अभिनव कुमार सिंह

16 संभावनाएं

अरुणाचल प्रदेश में क्विनोआ की खेती
रघुवीर सिंह **और** नीलम शेखावत

10 उद्यमिता

शूकर पालन से बढ़ाएं आमदनी
विक्रमजीत सिंह, अशोक चौधरी, सुरेश चंद कांटवा **और** गुलाब चौधरी

18 फार्मर फर्स्ट

बकरीपालन से आदिवासी कृषकों का उत्थान
पी. मूवेंथन, हेमप्रकाश वर्मा **और** सुमन सिंह

विषय-सूची

21 **पोषण**

जैव उर्वरकों से बढ़ाएं मृदा एवं फसल स्वास्थ्य

रुपेश कुमार मीना, अमर सिंह गोदारा, वाई. के. सिंह **और** अमीत कुमावत

25 **हरा सोना**

धान उत्पादन में अजोला की उपयोगिता

वीर सिंह, वीरेंद्र सिंह **और** सत्यभान सिंह

27 **दलहन**

उतेरा विधि से खेसारी की उन्नत खेती

अमितेश कुमार सिंह, राकेश कुमार, रवि शंकर, सूर्य भूषण **और** अमित कुमार सिंह

सफलता गाथा

आवरण II

शूकर पालन से आत्मनिर्भरता

29 **नियंत्रण**

सोयाबीन में समेकित कीट प्रबंधन

रूपसिंह, अरविन्द नागर, राकेश कुमार बैरवा, इरफान खान **और** सरिता

32 **कृषि कैलेण्डर**

अक्टूबर के मुख्य कृषि कार्य

राजीव कुमार सिंह, कपिला शेखावत, अंजली पटेल, एस.एस. राठौर **और** ऋषभ सिंह चंदेल

सामयिक

आवरण III

कृषि खबरें, देश-विदेश की

बकरीपालन से आदिवासी कृषकों का उत्थान

पी. मूवेंथन[1], हेमप्रकाश वर्मा[2] और **सुमन सिंह[3]**

"बकरी को भारत में 'गरीबों की गाय' के नाम से भी जाना जाता है। लघु एवं सीमांत क्षेत्रों के किसानों की आजीविका में बकरीपालन का बहुत बड़ा योगदान है। बकरियां बहुमुखी पशु हैं, जो दूध, मांस, फाइबर और खाद प्रदान करती हैं। बकरी उत्पादन में 148.88 मिलियन से अधिक की आबादी के साथ भारत दुनिया में पांचवें स्थान पर है, जो वैश्विक आबादी का 13.39 प्रतिशत है। हमारा देश बकरी के मांस उत्पादन में भी दूसरे स्थान पर है, जो सकल घरेलू उत्पाद में 8 प्रतिशत का योगदान देता है और 4 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को रोजगार प्रदान करता है। लघु और सीमांत किसानों के लिए बकरीपालन एक लाभदायक उद्यम है। इसमें बहुत कम निवेश की आवश्यकता होती है और यह गाय या भैंस पालन का एक लाभदायक विकल्प हो सकता है। बकरियों को दूध और मांस के लिए पाला जाता है, जो भूमिहीन, लघु और सीमांत किसानों की अर्थव्यवस्था और पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।"

बकरीपालन कम उपजाऊ भूमि के लिए लाभकारी उद्यम है। ये पशु कठोर वातावरण परिस्थितियों में भी जीवित रह सकते हैं। इस कारण बकरीपालन ग्रामीण क्षेत्रों में एक आवश्यक उद्यम बन जाता है। वैश्विक स्तर पर, गाय के दूध की तुलना में बकरी के दूध का अधिक सेवन किया जाता है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी गरीब और भूमिहीन या सीमांत किसानों के लिए बकरीपालन अतिरिक्त एवं नियमित आय का साधन होने के साथ-साथ एक वैकल्पिक लाभदायक उद्यम के रूप में तेजी से उभर रहा है।

[1]वरिष्ठ वैज्ञानिक; [2]यंग प्रोफेशनल; [3]सीनियर रिसर्च फैलो, भाकृअनुप-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरोंडा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

चुनौतियां

कसडोल ब्लॉक में मुख्य रूप से

बकरीपालन से आजीविका

आर्थिक रूप से कमजोर ग्रामीणों के आहार और पोषण सुरक्षा में बकरियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। खासतौर पर वर्षा आधारित क्षेत्रों में जहां फसल उत्पादन अनिश्चित है। बड़े जुगाली करने वाले पशुओं को पालना चारे और चारे की भारी कमी के कारण कठिन होता है। बकरीपालन अन्य पशुओं की तुलना में अलग-अलग आर्थिक और संचालन संबंधी लाभ प्रदान करता है। इसमें कम प्रारंभिक निवेश, कम आदानों की आवश्यकता, अधिक प्रजनन, जल्दी यौन परिपक्वता और विपणन में आसानी होती है। बकरियां प्रतिकूल परिस्थितियों में उपलब्ध झाड़ियों और वृक्षों पर उपलब्ध चारे से कुशलतापूर्वक जीवित रह सकती हैं। इसके अतिरिक्त बेहतर मूल्य प्राप्त करने के लिए आसपास के बाजारों के साथ संबंध बनाकर बकरियों की बिक्री के संबंध में भी किसानों को सहायता प्रदान की गई। इससे बकरियों की बिक्री सुगम हुई।

आदिवासी किसानों की आबादी अधिक है। खरीफ के मौसम में मुख्यत: धान की कटाई के बाद कोई नियमित आय का स्रोत उपलब्ध नहीं होता। इस वजह से 40 से 60 प्रतिशत किसान वैकल्पिक आजीविका की तलाश में दूसरे राज्यों की ओर पलायन करने को मजबूर हो जाते हैं।

अपनाई गई विस्तार गतिविधि

सुदूर क्षेत्र में ग्रामीणों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों की पहचान करने के बाद, उन्हें वैकल्पिक आजीविका के रूप में बकरीपालन अपनाने का सुझाव दिया गया। महिलाओं सहित 15 से 20 सदस्यों वाले किसानों का एक समूह बनाया गया। सभी पांच गांवों में कुल पांच समूह बनाए गए। इसके बाद उन्हें इटारसी (मध्य प्रदेश) से उन्नत नस्ल की सिरोही, जमुनापारी और बारबरी बकरियां उपलब्ध करवाई गईं। किसानों को कुल 83 बकरियां प्रदान की गईं, जिनमें 5 नर और 78 मादा बकरियां शामिल थीं। किसानों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध चारा और अन्य आवश्यक सामग्री जैसे हरी पत्तियां भी प्रदान की गईं। स्थानीय पशु चिकित्सा विभाग की मदद से टीकाकरण, स्वास्थ्य देखभाल गतिविधियां और अन्य क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

बकरी पालन में महिलाओं की अहम भूमिका

उन्नत प्रबंधन से स्वस्थ पशुपालन

आदिवासी किसानों के लिए उपयोगी नस्लें

सिरोही नस्ल

इन बकरियों का शरीर हृष्ट-पुष्ट गहरीला मध्यम आकार का होता है। इनके कान चपटे नीचे की ओर लटके हुए लंबे पत्तेनुमा होते हैं। सिरोही मांस एवं दूध के लिए अच्छी मानी जाती है। यह एक बार में आमतौर पर 2 बच्चों को जन्म देती है। इसके शरीर पर गहरे और हल्के भूरे रंग के धब्बे पाये जाते हैं। पूंछ छोटी और ऊपर की ओर उठी होती है। गले के नीचे अंगुली के समान 2 गुल्टे (मांसल भाग) होते हैं। मुंह के जबड़े के नीचे की ओर दाढ़ीनुमा बाल पाए जाते हैं।

यह नस्ल 115 दिनों की अवधि में 75 कि.ग्रा. दूध देती है। नर बकरों का वजन 40-50 कि.ग्रा. तक और मादा का 23-27 कि.ग्रा. होता है। यह नस्ल मुख्य रूप से राजस्थान के अरावली पर्वत क्षेत्रों में (नागौर, टौंक, राजसमंद, उदयपुर, सिरोही एवं अजमेर) पायी जाती है।

जमुनापारी नस्ल

जमुनापारी बकरी दूध और मांस दोनों के लिए उपयुक्त दोहरे उद्देश्य वाली नस्ल है। यह सबसे तेजी से बढ़ने वाली नस्ल है। यह बकरी 9 महीने के अंतराल में लगभग 28 कि.ग्रा. वजन प्राप्त करती है। जमुनापारी

सारणी: सिरोही, जमुनापारी और बारबरी नस्ल की कुल 83 बकरियों का लाभ और लागत विश्लेषण

लागत प्रति वर्ष				लाभ प्रति वर्ष			
वस्तुएं	दर (रुपये प्रति ईकाई)	कुल आवश्यकता	आवर्ती लागत की कुल राशि (रुपये)	वस्तुएं	दर (रुपये प्रति ईकाई)	मात्रा (कि.ग्रा.)	कुल राशि (रुपये)
चरवाहा	415	12 महीना	4980	जीवित शरीर का वजन	430	1320	567600
चिकित्सा और टीकाकरण	450	83	37350				
शेड (सं.)	230000	1	230000				
पालन-पोषण की कुल लागत			272330	पालन-पोषण का कुल लाभ			567600
शुद्ध आय	295270						
लाभ: लागत अनुपात	2.08						

भारत से उत्पन्न होने वाली खूबसूरत नस्लों में से एक है, जो अपने लंबे पेंडुलस कानों के लिए प्रसिद्ध है। यह नाम उत्तर प्रदेश में जमुना नदी (जमना पार) के स्थान से लिया गया है। जमुनापारी को कुछ अन्य नामों जैसे-जमनापारी, राम सगोल के नाम से भी जाना जाता है।

बारबरी नस्ल

बारबरी बकरियां मांस उत्पादन और ट्रिपल किडिंग के लिए भी जानी जाती हैं। यह नस्ल जल्दी परिपक्व हो जाती है और सामान्य बकरी रोगों से प्रतिरोधी होती है। बारबरी बकरी का मांस रूपांतरण अनुपात अच्छा होता है। यह संयमित और स्टॉल-फीड सिस्टम के तहत पालन के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।

यह नस्ल दूध उत्पादन में भी अच्छी मानी जाती है और अत्यधिक विपुल होती है। यह नस्ल मुख्य रूप से मांस उत्पादन के लिए उपयोग की जाती है। यह पंजाब, राजस्थान, आगरा तथा उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में पाई जाती है। यह एक मध्यम ऊंचाई का पशु है, जिसके शरीर का आकार छोटा होता है। इसके छोटे और ट्यूबलर कान होते हैं। नर बारबरी का वजन 38-40 कि.ग्रा. और मादा का वजन 23-25 कि.ग्रा. होता है। नर बारबरी की लंबाई लगभग 65 सें.मी. और मादा की लंबाई लगभग 75 सें.मी. होती है। नर और मादा बारबरी बकरी दोनों की बड़ी एवं मोटी दाढ़ी होती है। ■

ग्रामीण आजीविका में बकरी पालन का महत्व अधिक

बकरीपालन के फायदे

- बकरीपालन में पशु के छोटे आकार और शांत स्वभाव के कारण कम आरंभिक निवेश की आवश्यकता होती है। इससे आवास और प्रबंधन संबंधी समस्याएं कम होती हैं। इसके साथ ही विशेष आश्रय और आहार की आवश्यकता नहीं होती है। बकरीपालन का कार्य महिलाओं द्वारा भी आसानी से किया जा सकता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बकरीपालन लाभकारी रोजगार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अलावा, बकरियां मांस, दूध और खाद का उत्पादन करके बहुउद्देश्यीय लाभ प्रदान करती हैं।
- यह ग्रामीण निम्न आय वर्गों के लिए रोजगार उत्पन्न करता है। साथ ही बकरी के मांस और दूध उत्पादों पर आधारित कुटीर उद्योगों के लिए संभावना प्रदान करता है।
- बकरियों को खिलाना, दूध निकालना और उनकी देखभाल करना सरल कार्य हैं। इसके लिए व्यापक उपकरण या अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है।
- ये पशु 10-12 महीनों में यौन परिपक्वता प्राप्त करते हैं। इनका गर्भकाल छोटा होता है। बकरियां 16-17 महीनों में दूध देना शुरू कर देती हैं।
- बकरियों को उन क्षेत्रों में सफलतापूर्वक पाला जा सकता है, जहां चारे के संसाधन सीमित हैं।
- बकरीपालन में पूंजी पर 50 प्रतिशत तक का लाभ प्राप्त होता है।
- ये पशु विभिन्न पत्तियों, झाड़ियों और रसोई अपशिष्ट आदि को खाकर अपना विकास कर सकते हैं। बकरीपालन एक किसान के लिए लाभदायक हो सकता है और मिश्रित खेती में अच्छी तरह से समावेशित हो जाता है।
- बकरियां शुष्क से लेकर ठंडी, गर्म, आर्द्र और विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल होने में भी सक्षम हैं।
- इन्हें विभिन्न जलवायु परिस्थितियों, मैदानी एवं पहाड़ी इलाकों, रेतीले क्षेत्रों और उच्च ऊंचाई पर आसानी से पाला जा सकता है।
- बकरी का मांस दुबला, कम कोलेस्ट्रॉल युक्त और कम वसा वाले आहार के लिए उपयुक्त होता है।
- बकरी का दूध पचने में आसान और एलर्जी रहित होता है, जो भूख और पाचन क्षमता में सहायता करता है।

सूचना

ग्राहकों से निवेदन है कि वे *'खेती'* पत्रिका हेतु अपना चंदा समय से पूर्व भेजने की व्यवस्था करें, ताकि पत्रिका समय पर और लगातार मिलती रहे। यदि आपका पता बदल गया है तो उसकी तुरंत सूचना दें। इसके लिए अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

व्यवसाय प्रभारी
कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कृषि अनुसंधान भवन-1, पूसा,
नई दिल्ली-110012